Essence Of Murli

05-07-2014

- ✓इस दुनिया में दुःख ही दुःख है | बाप ने समझाया है अभी तुम विषय सागर में पड़े हो | असुल में तुम क्षीरसागर में थे | विष्णुपुरी को क्षीरसागर कहा जाता है |

- ✓तुम जानते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जबकि बाप आते हैं सबको वापिस ले जाते हैं |

✓अब तुम बच्चे जानते हो बाबा आया हुआ है | दुनिया तो यह समझ न सके | समझेंगे वही जिन्होंने 5 हज़ार वर्ष पहले समझा है इसलिए गायन है कोटों में कोई, कोई में भी कोई | मैं जो हूँ जैसा हूँ, बच्चों को क्या सिखाता हूँ, वह तो तुम बच्चे ही जानते हो और कोई समझ न सके | यह भी तुम जानते हो हम कोई साकार से नहीं पढ़ते हैं | निराकार पढ़ाते हैं |

- ✓यह तख़्त विनाशी है, आत्मा तो अकाल है | वह कभी मृत्यु को नहीं पाती | शरीर मृत्यु को पाता है | यह है चैतन्य तख़्त |
- ✓ अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है बाबा आया हुआ है, हमको अपने घर ले जाने लिए |
- ✓ यह है मनुष्य से देवता बनने का इम्तहान | बाप ऐसे तो नहीं कहेंगे कि सब नारायण बनेंगे | नहीं, जो अच्छा पुरुषार्थ करेंगे, वे पद भी अच्छा पायेंगे |

- ✓परमपिता अक्षर राईट है और मीठा है | सिर्फ़ भगवान्, ईश्वर कहने से वर्से की खुशबू नहीं आती है | तुम परमपिता को याद करते हो तो वर्सा मिलता है | बाप है ना |

- ✓पारसबुद्धि बनाने वाला है ही परमपिता बेहद का बाप | इस समय तुम्हारी बुद्धि है पारस क्योंकि तुम बाप के साथ हो |

- ✓तुम्हारा जीवन इस समय एकदम परफेक्ट बनता है जबकि तुम बाप मिसल ज्ञान का सागर, सुख-शान्ति का सागर बनते हो | सब वर्सा ले लेते हो | बाप आते ही हैं वर्सा देने | पहले-पहले तुम शान्तिधाम में जाते हो, फिर सुखधाम में जाते हो |

- ✓स्वर्ग का साक्षात्कार भी बच्चियां करके आती हैं | वहाँ की ब्यूटी ही नेचुरल है | अभी तुम बच्चे उस दुनिया में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हो |

- ✓वरदान: अकल्याण के संकल्प को समाप्त कर अपकारियों पर उपकार करने वाले ज्ञानी तू आत्मा भव

- ✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |